

Kuchipudi Recital

by

Mallika Sarabhai

at the Banquet hosted in honour of

His Excellency Mr. William J. Clinton

President of the United States of America

by

Sbri K.R. Narayanan

President of the Republic of India

Rashtrapati Bhavan

New Delhi

21 March, 2000

Kuchipudi

Amongst schools of Indian classical dance, that have been revived in this century, Kuchipudi has a very interesting history, both at the level of theory as also practice. The evolution of this style is developing and its contemporary revival and popularity throws significant light on the dynamics of the performing arts. The history of Kuchipudi reveals the interplay of not only the temple and the courtyard, but also the urban and the rural, the female and the male and the mutual dialogue between the States of Tamil Nadu and Andhra Pradesh.

A dance-drama style of Andhra Pradesh, Kuchipudi takes its name from the place of its origin. The technique of the art reveals a fine balance between sequences of pure dance and interpretative dance; song and speech. It is this last factor that makes Kuchipudi not merely dance but dance-drama. The performers portray themes through mime and gesture as well as speech and song. The speech and song is rendered by the dancer-actors and not by accompanying musicians. The plays are in Telugu and traditionally, all the roles are performed by men only. However, this is no longer the case and Kuchipudi boasts several female exponents today. Kuchipudi has an earthiness of expression that makes it unique.

MALLIKA SARABHAI

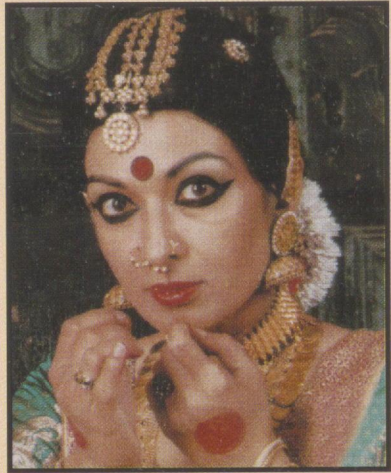
Mallika Sarabhai is a performer and creator of many talents. Her career has developed from being a young, internationally acclaimed, classical dancer and film personality, to being an activist and commentator on social issues.

Now an established artiste, she celebrates positive reaffirmation of images of womanhood through dance, theatre and writing. Following the rich and

inspiring model of her mother Mrinalini, Mallika has placed herself firmly at the cutting edge of Indian dance and dance theatre. As dancer, actress, choreographer, writer and initiator of community projects, she challenges audiences to realign themselves to questions of ecology, the woman's place in society, gender awareness, cultural atrophy, the very place of the arts in our society.

Deeply rooted in Indian cultures, but open to the influences of her collaborations around the world she has synthesized her experiences to become one of the creative influences in India today.

Mallika is co-director of the Darpana Academy of Performing Arts, (Ahmedabad) where she co-ordinates the training of hundreds of students in dance, theatre, puppetry and music. She directs the Darpana Dance Company, the Janavak Folk and Tribal Dance Company, Darpana for Development and administers and co-ordinates the Academy's overall activities.



Programme

Ganesha Kauthuvam

This is one of the rarest items of the Kuchipudi repertoire and was thought to have been lost in the early part of the century. However, it was preserved by (Late) Lakshminarayan Shastri and thereafter by Guru Shri C.R. Acharyalu, who subsequently passed it on to his pupil Mallika Sarabhai.

The item used to be performed for the festival of *Ganesh Chaturthi* and has a beautiful crescendo composed in the *Vinayaka tala*, a difficult and hardly heard - of *tala* of 72 *matras*. The *padam* itself is a description of the child Ganesha's dance. In the process of dancing, the dancer draws the figure Ganesha with her feet on the canvas on which she is dancing.

Pehrani Nrityam

Pehrani Nrityam is a dance which was performed at the Shiva Temple at Srisaillam, Andhra Pradesh during festivals. The *pehrani* (pot), represents the earth and this item describes how the goddess Parvati created the world.

Accompanying Musicians :

| | |
|-----------------------------|---------------------|
| Kizhakumpat Jayan | (Vocalist) |
| Vaithinathan Balagurunathan | (Vocalist) |
| Dinesh Kumar Sheikh | (Drummer) |
| Rathinam Kaliya Perumal | (Flautist) |
| T. Palanivelu | (Mridangam) |
| K.L.N. Sastry | (Violinist) |
| Bharat Karsanbhai Baria | (Supporting Artist) |
| Akshay Rameshbhai Patel | (Supporting Artist) |

Presented by

Indian Council for Cultural Relations

"Strengthening cultural relations & mutual understanding
with other countries since 1950"

<http://education.vsnl.com/iccr>

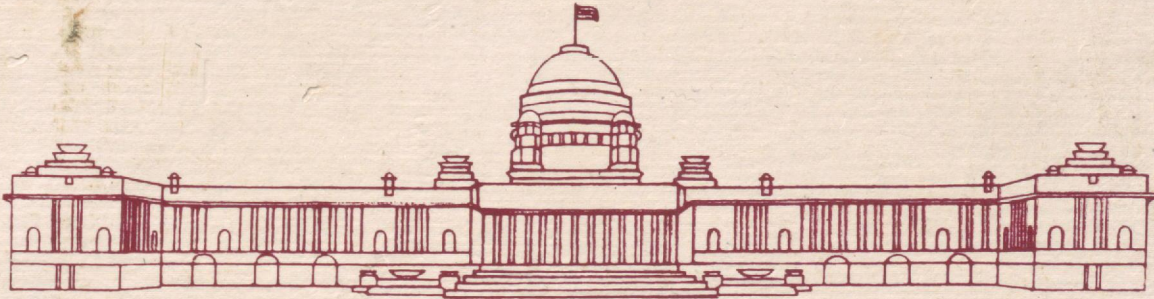


सत्यमेव जयते

राज-भोज

संयुक्त राज्य अमरीका के राष्ट्रपति
महामहिम श्री विलियम जेफरसन क्लिंटन

के सम्मान में



राष्ट्रपति भवन

मंगलवार, 01 चैत्र, 1922 शक (21 मार्च, 2000)

2000 बजे

निरामिष

मशरूम सूप

*

डोसा - नारियल चटनी

*

मशरूम कबाब / दाल कबाब / सब्जी कटलेट

सब्जी शाशिलक

सब्जी बिरयानी

नान / पुदीना परांठा

शाही पनीर

नवरत्न कोरमा

भिण्डी मुरक्कु

दाल मखनी

खीरा रायता

पापड़ - सलाद

*

शाही टुकडा

पिस्ता और बादाम आइसक्रीम

जलेबी

*

ताजे फल

*

चाय / कॉफी

VEGETARIAN

Mushroom Consommé

*

Dosa - Coconut Chutney

*

Mushroom Kabab / Lentil Kabab / Vegetable Cutlet

Vegetable Shashlik

Vegetable Biryani

Naan / Mint Parantha

Shahi Paneer

Navrattan Korma

Okra Murku

Dal Makhani

Cucumber Raita

Papad - Salad

*

Shahi Tukra

Pistachio and Almond Ice Cream

Jalebi

*

Fresh Fruits

*

Tea/Coffee

सामिष

मशरूम सूप

*

मछली पतरानी

*

झींगा गोल्डन फ्राई / सीख कबाब / हरियाली कबाब

तन्दूरी चिकन

मटन बिरयानी

नान / पुदीना परांठा

बटर चिकन

नवरत्न कोरमा

भिण्डी मुरक्कु

दाल मखनी

खीरा रायता

पापड़ - सलाद

*

शाही टुकड़ा

पिस्ता और बादाम आइसक्रीम

जलेबी

*

ताजे फल

*

चाय / कॉफी

NON-VEGETARIAN

Mushroom Consommé

*

Fish Patrani

*

Prawn Golden Fry / Seekh Kabab / Hariyali Kabab

Tandoori Chicken

Mutton Biryani

Naan / Mint Parantha

Butter Chicken

Navrattan Korma

Okra Murku

Dal Makhani

Cucumber Raita

Papad - Salad

*

Shahi Tukra

Pistachio and Almond Ice Cream

Jalebi

*

Fresh Fruits

*

Tea/Coffee

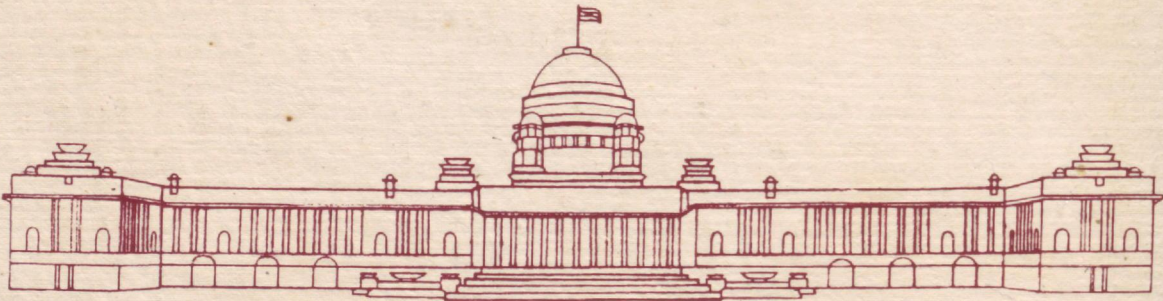


सत्यमेव जयते

BANQUET

IN HONOUR OF.

His Excellency
Mr. William Jefferson Clinton,
President of the
United States of America



Rashtrapati Bhavan
Tuesday, 21st March, 2000
2000 hrs.



सत्यमेव जयते

संयुक्त राज्य अमरीका के राष्ट्रपति
महामहिम श्री विलियम जे. क्लिंटन
के सम्मान में आयोजित
राजकीय भोज के अवसर पर
भारत के राष्ट्रपति
श्री के. आर. नारायणन्

का

अभिभाषण

SPEECH

BY

THE PRESIDENT OF INDIA
SHRI K. R. NARAYANAN

AT THE BANQUET
IN HONOUR OF

HIS EXCELLENCY MR. WILLIAM J. CLINTON
PRESIDENT OF THE UNITED STATES OF AMERICA

राष्ट्रपति भवन
नई दिल्ली
१ चैत्र, १९२२ (शक)

Rashtrapati Bhavan
New Delhi
March 21, 2000

(Please check against delivery)

संयुक्त राज्य अमरीका के राष्ट्रपति महामहिम श्री विलियम जैफरसन क्लिंटन महामहिमगण और गणमान्य अतिथिगण,

राष्ट्रपति महोदय, भारत की सरकार और भारत के लोगों की ओर से आपका और आपके शिष्टमंडल के लोगों, संयुक्त राज्य अमरीका की कांग्रेस के माननीय सदस्यों और अमरीकी सरकार के उच्च अधिकारियों का स्वागत करते हुए मुझे बहुत हर्ष हो रहा है। हमें मालूम है कि राष्ट्रपति बनने के समय से ही आपकी भारत की यात्रा करने की इच्छा थी। आपके इस इरादे के एक अग्रदूत के रूप में संयुक्त राज्य अमरीका की प्रथम महिला, मादाम हिलेरी रोडाम क्लिंटन मार्च, 1995 में भारत की यात्रा पर आयी थीं। हमें उनकी इस यात्रा का मधुर स्मरण है। इस अवसर पर हमें उनकी अनुपस्थिति महसूस हो रही है।

भारत और अमरीका एक-दूसरे के साथ विचारों, आदर्शों और उद्दीप्त हितों के पारस्पर्य से जुड़े हैं। ये संबंध अर्थव्यवस्था और व्यापार के प्रलोभनों और किसी सैन्य गठबंधन की उलझन से कहीं दूर प्रगाढ़ और गहन हैं। अधिकांश भारतीयों के लिए संयुक्त राज्य अमरीका के नाम में बेंजामीन फ्रैंक्लिन, जॉर्ज वाशिंगटन, टॉमस जैफरसन और एब्राहेम लिंकन के नामों और उनके उच्च आदर्शों तथा एमरसन, थोरो और वाल्ट व्हिटमैन जैसे अमरीका के उत्कृष्ट विचारकों और लेखकों के दर्शन और विचारों की गूंज सुनाई देती है। इन विचारकों तथा लेखकों से विवेकानन्द, रविन्द्रनाथ ठाकुर, जवाहरलाल नेहरू और, निश्चय ही, महात्मा गांधी जैसे महान भारतीय प्रभावित हुए। अमरीका में अश्वेत लोगों द्वारा समानता के लिए किए गए संघर्ष में मार्टिन लूथर किंग जूनियर पर महात्मा गांधी के प्रभाव से विश्व इतना परिचित है कि जब मार्टिन लूथर किंग की हत्या हुई तो वह कह उठा, “एक और गांधी पर गोली चली है।”

राष्ट्रपति महोदय, व्यापार और वाणिज्य की प्रेरणा से और ज्यादा बड़े ऐसे कुछ मनोयोग भी हैं जो हमारे दो देशों को और इन देशों के लोगों को जोड़े हुए

हैं। 1961 में एक ऐसे समय में जब हम बड़े कठिन मसलों का मुकाबला कर रहे थे तब प्रधान मंत्री जवाहरलाल नेहरू ने राष्ट्रपति जॉन. एफ. कैनेडी को एक पत्र लिखा था जिसमें उन्होंने कहा कि चाहे संयुक्त राज्य अमरीका हमें कुछ भी न दे, पर भारत उसके साथ दोस्ती बनाए रखेगा। इस विचार को विस्तार से अभिव्यक्त करते हुए नेहरू ने इससे कुछ समय पहले भारतीय राज्यों के मुख्य मंत्रियों को पत्र लिखा था जिसमें उन्होंने यह कहा था, “बहुत से लोग यह सोचते हैं कि अमरीका के साथ हमारे संबंध इस बात पर निर्भर करते हैं कि वह देश हमें कितनी वित्तीय राशि की सहायता दे सकता है। यह बिलकुल ही गलत अवधारणा है। अमरीका चाहे हमें बहुत दे या कम, या फिर कुछ भी न दे, तब भी उनके साथ हमारे संबंधों पर कोई ज्यादा असर नहीं पड़ेगा बशर्ते अन्य बातें संतोषजनक ढंग से चलती रहें। ये अन्य बातें और राजनैतिक कारक ही तो हैं जो निरन्तर हमारे रास्ते में आड़े आते रहे हैं।” इससे बहुत पहले 1936 में जब संयुक्त राज्य अमरीका के ईसाई कर्मकारों के एक समूह ने महात्मा गांधी से भेंट की थी तब उन्होंने भी लगभग इसी तरह की भावना व्यक्त की थी। उन्होंने उन ईसाई कर्मकारों के सवालों का जवाब देते हुए कहा था : “जब अमरीकी मेरे पास आते हैं और मुझ से कहते हैं कि वे हमारी क्या सेवा कर सकते हैं तो मैं उनसे पूछता हूँ ‘यदि आप हमारी आँखों के सामने लाखों में डॉलर नोट हिंडोलते रहे तो इससे आप हमें भिखारी बना देंगे और हमारा नैतिक पतन कर देंगे। परन्तु एक और लिहाज़ से मैं भिखारी बनना बुरा नहीं मानता। आप अपने इंजीनियरों और कृषि विशेषज्ञों से कहें कि वे अपनी सेवाएं हमें प्रदान करें। बशर्ते वे हमारे पास मालिक और अधिपति बनकर न आएँ बल्कि स्वयंसेवी कार्यकर्ताओं के रूप में आएँ।” जब से नेहरू और गांधी ने ये उद्गार व्यक्त किए तब से आर्थिक, वाणिज्यिक तथा वैज्ञानिक विनिमय के क्षेत्र में हमारे दो देशों के सम्बंधों में गुणवत्ता और परिमाण दोनों ही दृष्टियों से भारी बढ़ोतरी हुई है। संयुक्त राज्य अमरीका लाखों टन गेहूँ भारत भेजता रहा है और अमरीका के कृषि विशेषज्ञों ने यहाँ हरित क्रांति की ज्योति जगाने में हमारी सहायता की। यह हरित क्रांति स्वतंत्रता के पश्चात् भारत द्वारा हासिल की गई बड़ी-बड़ी उपलब्धियों में से एक है। अमरीका आज व्यापार और निवेश के क्षेत्र

में भारत का सबसे बड़ा भागीदार बनकर उभरा है और हमारे आर्थिक सहयोग में हमारे दो देशों के लिए और विश्व कल्याण हेतु शानदार संभावनाएं हैं। यहाँ मैं अमरीका में बस रहे भारतीय मूल के हमारे दस लाख लोगों द्वारा किए गए योगदान का उल्लेख करना चाहूंगा। इन लोगों ने अपने अपनाए देश के प्रति तथा अमरीका और भारत के बीच सहयोग की दिशा में प्रचुर योगदान दिया है।

इस बात में कोई विवाद नहीं कि शीत युद्ध के दौरान सैन्य गुटबंदी और वैचारिक गुट-राजनीति तथा अमरीका द्वारा उस कठिन समय में भारत की गुट-निरपेक्षवाद और शांतिपूर्ण सहअस्तित्व की नीति को न समझ पाने के कारण हमारे सम्बंध कुछ बिगड़ गए थे। शीत युद्ध के समय की मनःस्थिति पूरी तरह से नहीं बदल पाई है। शीत युद्ध की नीतियों के कुछ अवशेष अभी भी विश्व को सता रहे हैं। राष्ट्रपति महोदय, हमारा मानना है कि शीत युद्ध के बाद के विश्व में बहुवादी विश्व व्यवस्था की गुट-निरपेक्षता की अवधारणा सैन्य प्रखंडों और गुटबंदियों की राजनीति की अपेक्षा अधिक प्रासंगिक है। ऐसी अवस्था में मुझे जवाहर लाल नेहरू के वे शब्द याद आ रहे हैं जो उन्होंने 1946 में अपना पद भार ग्रहण करते हुए कहे थे, “संयुक्त राज्य अमरीका को नियति ने अंतरराष्ट्रीय मामलों में एक प्रमुख भूमिका प्रदान की है। हम इसके लोगों को अपनी शुभकामनाएं भेजते हैं। हमारा विश्वास है कि इस भारी दायित्व का उपयोग वह हर जगह शांति और मानवीय स्वतंत्रता का विस्तार करने के लिए करेगा।” प्रधान मंत्री नेहरू के राष्ट्रपति आइज़नहावर और उसके कई वर्षों बाद राष्ट्रपति जॉन एफ कैनेडी से संबंध मधुर थे। जॉन एफ कैनेडी के बारे में नेहरू ने कहा था, “उनके देश को धन-दौलत और समृद्धि मिली। राष्ट्रपति कैनेडी ने इसमें और गहन मानवीय और नैतिक दृष्टिकोण जोड़ा जिसने अपने विश्व के लोगों को आप में समाविष्ट कर दिया।” राष्ट्रपति महोदय, आपकी अपनी दूरदर्शिता में भी यही गुण हैं। आपने भी विकासशील राष्ट्रों की प्रगति के लिए अपनी महान शक्ति जुटा दी है। आपने हमारे द्विपक्षीय सम्बंधों की प्रमुख चुनौती को एक अवसर में बदल देने के लिए भी प्रयास किया है जिसे दोनों ही पक्षों ने पूरे मन से समझा और जाना है।

राष्ट्रपति महोदय, शीत युद्ध के बाद की एक उल्लेखनीय विशेषता यह है कि विकासशील राष्ट्र बड़ी संख्या में विश्व के राजनैतिक और आर्थिक पटल पर उभर आए हैं। एक अन्य प्रमुख तथ्य है—संयुक्त राज्य अमरीका का विश्व में एक प्रमुख आर्थिक, प्रौद्योगिक और सैन्य कारक के रूप में उभर कर आना। संयुक्त राज्य अमरीका पर विश्व में शांति और स्थिरता को मजबूत बनाने का भारी दायित्व है। इस प्रयोजन के लिए संयुक्त राष्ट्र संघ को मजबूत बनाया जाना चाहिए और इसे हमारे नए विश्व-स्थापत्य के मूल-पाषाण के रूप में देखा जाना चाहिए। राष्ट्रपति महोदय हम समझते हैं कि संयुक्त राज्य अमरीका के पूर्ण सहयोग से और विश्व के आज के यथार्थ को दर्शाते हुए विकासशील देशों को केन्द्रीय ढांचे में यथोचित स्थान देकर संयुक्त राष्ट्र संघ को मजबूत बनाया जा सकता है। हमारा मानना है कि विकासशील राष्ट्रों में से भारत को न केवल अपने विशाल आकार, जनसंख्या और अपने आर्थिक और प्रौद्योगिक दर्जे तथा अपनी क्षमताओं की वजह से, बल्कि उसके द्वारा संयुक्त राष्ट्र के हित के लिए बड़ी-बड़ी सेवाएं प्रदान किए जाने की वजह से, उसे नए रूप में संशोधित और विस्तारित सुरक्षा परिषद् में प्रतिनिधित्व हासिल करने का पूरा अधिकार है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पूरे समय के दौरान और विशेष रूप से स्वतंत्रता प्राप्ति के आरम्भिक वर्षों में जब संयुक्त राष्ट्र स्वयं खतरे में था, भारत ने इस विश्व निकाय का हित-पोषण किया है।

राष्ट्रपति महोदय, हम इस बात को जानते-मानते हैं और इसका स्वागत भी करते हैं कि विश्व अनिवर्चनीय रूप से एक एकल विश्व बनने की ओर अग्रसर है। भारत को प्राचीन समय से ही एकल विश्व और सम्पूर्ण मानवता के एक कुटुम्ब के रूप में उभर कर आने का आभास था। परन्तु हमारे लिए भूमण्डलीकरण का यह अभिप्राय नहीं है कि इससे इतिहास और भूगोल का और विश्व की जीवंत और मनोहर विविधताओं का ही अंत हो जाए। जैसा कि अफ्रीका के एक राजनयिक ने हमें एक बात बतायी थी, कि विश्व के एक एकल 'ग्राम' होने का तात्पर्य यह नहीं कि इसका संचालन किसी एक ग्राम प्रधान द्वारा किया जाएगा। लोकतंत्र के इस युग में इस भूमण्डलीय ग्राम की अध्यक्षता एक

‘पंचायत’ द्वारा की जाएगी। हमारे लिए संयुक्त राष्ट्र संघ ही एक भूमण्डलीय ‘पंचायत’ है और यही कारण है कि हम लोकतांत्रिकृत और अखण्ड बने रहना चाहते हैं। भूमण्डलीकरण का अर्थ यह होता है कि भूमण्डलीय समाज को इसके एककों की सहायता से कायम रखा जाए और इसके ये एकक हैं—राष्ट्र, राज्य, समूह, परिवार और व्यक्ति जो अपनी अमिट पहचान और अद्वितीय विशेषताएं रखते हैं। बहुत पहले एकल विश्व के अपने स्वप्न का वर्णन करते हुए महात्मा गांधी ने कहा था—“विश्व के ज्यादा लोग आज सम्पूर्णतः स्वतंत्र राज्यों की इच्छा नहीं रखते बल्कि मैत्रीपूर्ण रूप से परस्पर निर्भर राज्यों के एक संघ की इच्छा रखते हैं।... मैं चाहता हूँ कि योग्यता, स्वतंत्रता का दावा किए बिना, पूर्णतः स्वतंत्र हो।”

इस तरह के भूमण्डलीकृत विश्व समाज में युद्ध के लिए और आधिपत्यवादी नियंत्रण या गला-काट प्रतिस्पर्धा के लिए कोई जगह नहीं होगी। राष्ट्रपति महोदय, भारत एक ऐसा देश है जिसने इस पृथ्वी के एक सबसे शक्तिशाली साम्राज्य से अपनी स्वतंत्रता एक अहिंसात्मक तरीके से खींच-तान करके हासिल की है। हमारे इस राष्ट्र का यह इरादा नहीं है कि हम ऐसी समस्याओं का समाधान, जो हमारे पड़ोसियों के कारण उत्पन्न हुई हैं, बल के प्रयोग द्वारा करें। हमारी इच्छा थी कि हम पाकिस्तान के साथ, जो कि हमारे अपने ही राष्ट्र से काटा गया हिस्सा है, विभाजन के पश्चात सौ-तरह का मैत्रीपूर्ण सहयोग करें। परन्तु यदि भारत की अखण्डता और स्वतंत्रता को कोई खतरा हो तो भारतीय राष्ट्र का इस विशाल देश में रहने वाले एक करोड़ लोगों के प्रति यह दायित्व बन जाता है कि वह अपने सभी संसाधनों और अपनी सम्पूर्ण शक्ति के साथ उनकी रक्षा करें। हमारा मन बातचीत के लिए और मतभेदों के शांतिपूर्ण समाधान के लिए खुला है। परन्तु क्या उन्हें आक्रमण करने और अंतरराष्ट्रीय सीमाओं या पावन संधियों और वचनों द्वारा मानी गई नियंत्रण रेखा के इस पार अंधाधुंध और सुसंगठित रूप से आतंकवाद फैलाने का दैविक अधिकार हासिल है? यह सुझाव दिया गया है कि भारत उप महाद्वीप आज विश्व का सबसे खतरनाक क्षेत्र बने हुए है और यह कि कश्मीर एक परमाणविक ज्वलनांक है। इस तरह की चेतावनी देने वाली बातें केवल उन

लोगों को प्रोत्साहित करेंगी जो शांति भंग करना चाहते हैं। खतरा हमसे नहीं है, जिन्होंने कि यह संजीदा उद्घोषणा की है कि हम परमाणु अस्त्रों का इस्तेमाल पहले नहीं करेंगे। यह खतरा उनसे है जो इस तरह का वचन देने से इनकार करते हैं। हम अन्य परमाणु शक्ति वाले देशों के साथ, जिनके पास परमाणविक शस्त्रों के ऐसे भण्डार हैं जो कि पूरे विश्व को कई बार नष्ट कर देने की क्षमता रखते हैं, परमाणु शस्त्रों को समाप्त करने के लिए सार्वजनिक रूप से प्रतिबद्ध हैं। भारत की ओर से किसी भी दूसरे देश को कोई धमकी नहीं है। भारत हथियारों की होड़ में लिप्त नहीं होगा। परन्तु भारत अपनी सुरक्षा के लिए एक न्यूनतम विश्वसनीय परमाणविक निवारक—न इससे ज्यादा और न इससे कम—बनाए रखेगा। हम जन-संहार के हथियारों के प्रसार को रोकने और जन-संहार के हथियारों से मुक्त विश्व कायम करने के उद्देश्य को बढ़ावा देने के लिए अमरीका के साथ काम करने के लिए अब भी उत्सुक हैं।

राष्ट्रपति महोदय, भारत की आपकी इस ऐतिहासिक और शुभ यात्रा के अवसर पर आइये हम विश्व से परमाणु निरस्त्रीकरण तथा परमाणु अप्रसार की दिशा में ठोस तथा पक्के कदम उठाने की अपील करें ताकि हम विद्यमान असमानताओं को बने न रहने दे सकें और राष्ट्रों की आयुद्धशालाओं में परमाणु अस्त्रों के भण्डारण को स्वीकार्य न होने दें।

राष्ट्रपति महोदय, आपकी यात्रा हमारे दो महान लोकतांत्रिक राष्ट्रों के बीच एक नई गतिशील और बहुपक्षीय साझेदारी की आधारशिला रखने का एक अवसर प्रदान करती है। हमारे दो देशों के लोग हमसे अब यह अपेक्षा रखते हैं कि हम राजनीतिक, आर्थिक और प्रौद्योगिकी के क्षेत्रों में अपने परस्पर बढ़ते हितों और विश्व के संबंध में उभरते अपने विचारों द्वारा समर्थित शांति और लोकतंत्र के प्रति साझी प्रतिबद्धता पर आधारित अपने संबंधों को आगे बढ़ाएं। इसके लिए हमारे लिए आवश्यक होगा कि हम हेनरी डेविड थोरो द्वारा वर्णित आधार पर सीधी और साफ बातचीत करें। थोरो ने कहा था—“सच कहने के लिए दो की जरूरत होती है। एक की बोलने के लिए और दूसरे की सुनने के लिए।”

महामहिमगण, देवियो और सज्जनो, मैं अब आपसे अनुरोध करता हूं कि हम सब मिलकर :

- संयुक्त राज्य अमरीका के राष्ट्रपति विलियम जैफरसन क्लिंटन के अच्छे स्वास्थ्य और खुशहाली की;
- भारत और संयुक्त राज्य अमरीका के लोगों के बीच सतत मित्रता की, और
- विश्व में शान्ति और न्याय के लिए हमारे संयुक्त प्रयासों में सफलता की कामना करें।

Your Excellency Mr. William Jefferson Clinton,
President of the United States of America,
Excellencies and Distinguished Guests,

It is with great pleasure, Mr. President, that I welcome you and the distinguished members of your delegation, the honourable members of the US Congress and high officials of the US Government on behalf of the Government and the people of India. We are aware that ever since your inauguration as President, you have wanted to visit India. As a harbinger of your intention, the First Lady of the United States, Madame Hillary Rodham Clinton, paid a visit to India in March, 1995. We have pleasant memories of that visit, and I should like to say that we miss her alongside you on this occasion.

India and the United States have been linked to each other by ideas, ideals and by enlightened interests. These go far beyond and deeper than the allurements of economics and trade and the entanglement of any military alliance. For most Indians, the United States of America resonates with the great names and the high ideals of Benjamin Franklin, George Washington, Thomas Jefferson and Abraham Lincoln, and the philosophy and thoughts of outstanding American thinkers and writers like Emerson, Thoreau and Walt Whitman who influenced great Indians like Vivekananda, Rabindranath Tagore, Jawaharlal Nehru and, of course, Mahatma Gandhi. The influence of Gandhi on Martin Luther King Jr. in the struggle for equality by the Blacks in America is well known, so much so that, when King was shot, the whole world said that, "another Gandhi has been shot".

Thus, Mr. President, impulses greater than trade and commerce have linked our two countries and peoples. In 1961, at a time when we were facing critical issues, the then Prime Minister Jawaharlal

Nehru wrote to President John F. Kennedy, saying that even if the United States did not give anything, India would remain friendly to her. Expatiating on this idea, Nehru wrote to the Chief Ministers of the Indian States some time earlier, "Many people imagine that our relations with the United States depend on the amount of financial aid that they can give us. This is a complete misapprehension. Whether the U.S. gives us much or little or nothing at all, our relations with them will not be affected much, provided other factors are satisfactory. It is these other and political factors that are constantly coming in the way." A somewhat similar sentiment was expressed by Mahatma Gandhi much earlier in 1936 when a group of Christian workers from the U.S.A. met him. He said answering their questions: "When Americans come and ask me what service they could render, I tell them, "if you dangle your millions before us, you will make beggars of us, and demoralize us. But in one thing I don't mind being a beggar. You can ask your engineers and agricultural experts to place their services at our disposal. They must come to us not as lords and masters, but as voluntary workers". Since Nehru and Gandhi gave expression to these sentiments, the relations between our two countries in economics and commerce and in the field of scientific exchanges have grown enormously both in quality and quantity. Millions of tons of wheat have been shipped to India by the U.S.A., and American agricultural experts have helped in igniting the Green Revolution which is one of the major achievements of India since Independence. The U.S.A. has emerged to-day as the Number One partner of India in the realms of trade and investment, and our economic co-operation promises spectacular prospects for the good of our two countries and the world. I must mention here the contributions of over one million people of Indian origin resident in America, who have made substantial contributions to the country of their adoption and to co-operation between the US and India.

But there is no gainsaying that in the Cold War period, our relations were bedevilled by military alignment and the ideological bloc politics and the difficulty, in that age of extremes, on the part of the United States in appreciating India's policy of non-alignment and

peaceful co-existence. The mindset of the Cold War has perhaps not entirely disappeared. Vestiges of the Cold War strategies still return to haunt the world. We believe, Mr. President, that in the post Cold-War world the non-aligned concept of a pluralistic world order is more relevant than the politics of military blocs and alignments. At this juncture I recall the words of Jawaharlal Nehru, who on assuming office in 1946 said: "We send our greetings to the people of the United States of America to whom destiny has given a major role in international affairs. We trust this tremendous responsibility will be utilized for the furtherance of peace and human freedom everywhere." Prime Minister Nehru had enjoyed a warm equation with President Eisenhower and, years later, with President John F. Kennedy. Of the latter Nehru said: "Wealth and prosperity came to his country. To these, President Kennedy added a deeper human and moral outlook which embraced in its scope the peoples of the world." It is a measure of your own far-sightedness, Mr. President, that you too have thrown your great energy for the advancement of developing nations. You have also striven to turn a major challenge in our bilateral relationship into an opportunity that both sides have grasped wholeheartedly.

Mr. President, one remarkable feature of the post Cold War world is this emergence of a large number of developing nations on the political and economic arena of the world. And the other dominant fact is the emergence of the United States of America as the major economic, technological and military factor in the world. The U.S.A. holds 'a tremendous responsibility' for strengthening peace and stability in the world. For that purpose the United Nations Organization should be strengthened and made the centre-piece of the new global architecture. We believe, Mr. President, that the United Nations can be strengthened by the unstinting support of the United States of America, and by reforming its major organs by giving the developing countries of the world their due place in its central structure, reflecting the realities of the world to-day. We believe that among the developing nations, India has, in terms not only of its immense size and population, its economic and technological status and potentialities, but in terms of its great services to the cause of the U.N., every right to be

represented on a reformed and expanded Security Council. Throughout its independent history, especially in the early years when the U.N. itself was under jeopardy, India had served the cause of the world body.

Mr. President, we do recognize and welcome the fact that the world has been moving inevitably towards a one-world. From the earliest times India has had the intimations of an emerging one-world, of humanity as a single family. But for us, globalization does not mean the end of history and geography, and of the lively and exciting diversities of the world. As an African statesman has observed to us, the fact that the world is a global village does not mean that it will be run by one village headman. In this age of democracy it will be headed by a *panchayat*. For us the United Nations is the global *panchayat*, and that is why we want it to be democratized and sustained. Globalization means that global society should be sustained by its units - the nation, states, groups, families and individuals who have their own inextinguishable identities and unique characteristics. Long ago Mahatma Gandhi described his vision of a one world in the following manner: "The better mind of the world desires to-day not absolutely independent States, but a federation of friendly inter-dependent States. I desire the ability to be totally independent, without asserting the independence".

In such a globalised world society there would be no place for war, for hegemonistic controls or cut-throat competition. India, Mr. President, is a country that has wrested its independence from one of the mightiest empires on earth by the method of non-violence. It is not the desire of this nation to solve such problems as we have with our neighbours by the use of force. With Pakistan, which was carved out of our body-politic, it was our desire to have friendly co-operation in a hundred ways after partition. But if India's integrity and independence is threatened, it becomes the duty of the Indian State, — its duty to the one-billion people who inhabit our vast land — to defend them with all the resources and strength at its disposal. We are open to dialogue and to peaceful settlement of differences. But

should they have the divine right of aggression and of indiscriminate and well organized terrorism across the international borders or the agreed line of control sanctified by solemn treaties and commitments? It has been suggested that the Indian sub-continent is the most dangerous place in the world to-day and Kashmir is a nuclear flash-point. These alarmist descriptions will only encourage those who want to break the peace and indulge in terrorism and violence. The danger is not from us who have declared solemnly that we will not be the first to use nuclear weapons; but rather it is from those who refuse to make any such commitment. We are publicly committed to the abolition of nuclear weapons together with other nuclear powers who possess them in awesome stockpiles capable of destroying the world many times over. India does not threaten any other country and will not engage in an arms race. But India will maintain a minimum credible nuclear deterrent - no more and no less - for her own security. We continue to be anxious to work with the USA to prevent the spread of weapons of mass destruction and to promote the goal of a world free of weapons of mass destruction.

On this historic and auspicious occasion of your visit to India, Mr. President, let us appeal to the world to take steps — concrete and substantive — towards nuclear disarmament along with non-proliferation so that we do not consolidate the existing inequalities and sanctify the possession of Nuclear weapons in the armouries of the nations.

Mr. President, your visit provides us an opportunity to lay the foundations for a new, dynamic and multifaceted partnership between our great democratic nations. Our peoples now expect us to advance our relationship based on a shared commitment to peace and democracy, reinforced by our growing mutuality of interests in the political, economic and technological fields, and by an increasing convergence of our world view. This will require us to remain engaged in frank dialogue on the lines described by Henry David Thoreau: "It takes two to speak the truth - one to speak and another to hear."

Excellencies, Ladies and Gentlemen, may I now invite you to join me in proposing a toast to:

- The good health and well being of the President of the United States of America, Mr. William Jefferson Clinton;
- To the abiding friendship between the peoples of India and the United States of America;
- To the success of our joint endeavours for peace and justice in the world.



सत्यमेव जयते

MUSIC TUNES

O Nile Gagan Ke Tale
Dhitam Dhitam Bole
Kuch Na Kaho
I Just Call To Say I Love You
Sweet Bengali
Gori Tera Gaon Bada Pyara
Mere Desh Ki Dharti
Hey Jude
Sader Lao
Naino Me Badra Chhayee
Made In India